प्लेटो का अनुकृति - सिद्धांत

- डॉ.पूजा (सा.आ.)

हिंदी विभाग

जैन कन्या पाठशाला (पी. जी.)कॉलेज

मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

यूनान के गौरवशाली महान चिंतकों एवं महान दार्शनिकों की सु दीर्घ एवं समृद्ध परंपरा में सुकरात के शिष्य प्लेटो(४२८ ई.पू.-३४७ई.पू.) का नाम मूर्धन्य है द रिपब्लिक स्टेटमेंट द प्रसिद्ध क्लॉज इत्यादि उनकी उल्लेखनीय कृतियां हैं।

- **प्लेटो- पूर्व अनुकरण –**
- प्लेटो से पूर्व ग्रीक काव्यशास्त्र में अनुकरण का अस्तित्व था होमरकी रचना हिम टू अपोलो तथा अरिस्तोफानेस की रचना विमेन सेलिब्रेटिंग दि थेसमोफोरिया कला की विवेचना अनुकरण मुलकताके अर्थ में की गई है।होमर ने अनुकरण शब्द के लिए –माइमेसिस शब्द का प्रयोग किया है। प्लेटो के अनुकरण सिद्धांत में अनुकरण का वह अर्थ नहीं है जो होमर में है। प्लेटो का अनुकरण सिद्धांत पूर्वर्ती अनुकरण सिद्धांत से भिन्न होते हुए भी उनके अनुकरण सिद्धांत का बीज इसमें निहित है प्लेटो ने पूर्ववर्ती अनुकरण सिद्धांत से आधार ग्रहण कर उसे एक नई अर्थव्यवस्था प्रदान की है उसे एक नए सांचे में ढाला है।

प्लेटो और अनुकरण का अर्थ

- प्लेटो ने अनुकरण को भिन्न भिन्न अर्थ और प्रसंगों में देखा एवं व्यंजित किया है। उन्होंने अनुकरण शब्द का प्रयोग सस्ती और त्रुटिपूर्ण अनुकृति के रूप में किया है कहीं अनुकरण को सभी कलाओं की मौलिक विशेषता बताया है तो कहीं कल्पना तथा रचनात्मक शक्ति के अर्थ में प्रयुक्त किया है प्लेटो ने इस संसार का मूल सत्य ईश्वर को स्वीकार करते हुए यह कहा है कि उसके सत्य की अनुकृति यह संसार है और इस संसार का अनुकरण ही काव्य है प्लेटो की मान्यता है कि कवि की अनुकृति की अनुकृति करता है।
- **प्लेटो का अनुकरण सिद्धांत की मूल मान्यताएं**
- ईश्वर द्वारा रचित प्रत्यय जगत ही सत्य है ईश्वर सृष्टा है।
- वस्तु जगत प्रत्यय जगत की अनुकृति या छाया होने के कारण मिथ्या या असत्य है।
- कला जगत वस्तु जगत का अर्थ अनुकरण का अनुकरण होने के कारण और भी मिथ्या है क्योंकि वह अनुकृति की अनुकृति करता है कलाकार अनु कर्ता है।
-

प्लेटो का काव्य पर आक्षेप

- प्लेटो द्वारा काव्य एवं कवि पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं-
- काव्य अनुकृति की अनुकृति है।
- कवि न केवल स्वयं अज्ञानी है बल्कि वह अज्ञान का प्रसारक भी है।
- काव्य क्षुद्र मानवीय भावों और कल्पना पर आधारित होता है कलात्मक रचनाएं समाज के लिए अनुपयोगी है।
- काव्य लोगों में वासना जन्य क्षुद्र भावों को जगाता है कवि समाज में अनाचार एवं दुर्बलता का पोषण करने का अपराधी है।

प्लेटो के अनुकृति सिद्धांत का मूल्यांकन

- प्लेटो के अनुकृति सिद्धांत का मूल्यांकन करते समय इस बात का सर्वप्रथम ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि प्लेटो आलोचक अथवा काव्यमीमांसा नहीं बल्कि एक महान दार्शनिक और राजनीतिक थे उनका उद्देश्य आदर्श गणराज्य की प्रतिष्ठापना करना था और उनकी दृष्टि उपयोगिता वादी और नैतिकता वादी थी उन्होंने नैतिक भावात्मकऔर शुद्ध उपयोगिता वादी दृष्टिकोण के आधार पर अपने युग के काव्य को दूषित प्रवृत्तियों के प्रभाव के कारण कविता पर गंभीर आरोप जड़े पर इसका भी प्राय यह नहीं की प्लेटों पूरी तरह से काव्य विरोधी थे उन्होंने ऐसी कविताओं को महत्वपूर्ण उचित एवं भाव उत्पादक माना जिनमें वीर पुरुषों की गाथा हो या देवताओं के स्त्रोत हो।
- डॉक्टर देवेंद्र नाथ शर्मा ने प्लेटो के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पाश्चात्य आलोचना के इतिहास मेंप्लेटो का स्थान जितना विशिष्ट है उतना ही प्रभावी । कला की अनुकरणमूलकता की खुद भावना का श्रेय प्लेटो को है। प्लेटो से प्राप्त अनुकरण के सूत्र को उपवृंहिता कर अरस्तु ने इसे एक सिद्धांत का रूप दिया जिसकी मान्यता शताब्दियों तक रही जो व्यक्ति 25 वर्षों तक चर्चा का विषय बना रहा है उसकी प्रासंगिकता को प्रमाण की अपेक्षा नहीं है।

- रामचंद्र तिवारी का भी मत है कि अपनी सीमाओं के बावजूद यूरोपीय काव्य चिंतन के क्षेत्र में प्लेटो का महत्व स्वीकार्य है उसने काव्यशास्त्र की ऐसी अनेक अवधारणाओं को व्यवस्थित किया है जो आगे चलकर परिवर्तित विचार को के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी है प्लेटो द्वारा प्रतिपादित अनेक सिद्धांत आज भी प्रासंगिक माने जाते हैं।
- निसंदेह प्लेटो का अनुकरण सिद्धांत पाश्चात्य काव्यशास्त्र का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है।